

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी (statue of unity)

चर्चा में क्यों?

31 अक्टूबर, 2018 को प्रधानमंत्री मोदी ने सरदार वल्लभभाई पटेल की 143वीं जयंती पर 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' का अनावरण कर, उसे देश को सौंपा। यह पूरे विश्व की अब तक की सबसे ऊँची प्रतमा मानी जा रही है।

क्या है स्टैच्यू ऑफ यूनिटी

- गुजरात के वडोदरा के पास नर्मदा ज़िले में स्थिति सरदार सरोवर बांध से 3.5 कमी. नीचे की तरफ, राजपपिला के नकिट साधुबेट नामक नदी द्वीप पर 182 मीटर ऊँची सरदार वल्लभभाई पटेल की प्रतमा लगाई गई।

मुख्य बंदि

- मात्र 33 महीनों में तैयार हुई यह प्रतमा, चीन के केंद्रीय हेनान प्रांत में स्थिति स्प्रिंग टेंपल की 11 सालों में नरिमति 153 मीटर ऊँची प्रतमा (अब तक विश्व की सबसे ऊँची प्रतमा का दर्जा प्राप्त था) से भी ऊँची है और न्यूयॉर्क की स्टैच्यू ऑफ लिबर्टी (93 मी.) की ऊँचाई से करीब दोगुनी है।
- प्रतमा के नरिमाण के लिये भारत भर के कसिानों से 'लोहा कैंपेन' के तहत, आवश्यक लोहे को इकटठा कया गया था।
- इस मूर्ताका डिज़ाइन पद्मभूषण पुरस्कार से सम्मानति मूर्तकार 'राम वनजी सुतर' ने तैयार कया था।
- प्रतमा का नरिमाण भारत की लार्सन एवं टूब्रो कंपनी तथा राज्य संचालति सरदार सरोवर नर्मदा नगिम लिमिटेड द्वारा कया गया।
- इसके नरिमाण के लिये गुजरात सरकार ने सरदार वल्लभभाई पटेल राष्ट्रीय एकता ट्रस्ट (SVPRET) का गठन कया था।

स्टैच्यू की विशेषता

- इस स्टैच्यू में लफिट की व्यवस्था की गई है जिससे पर्यटक प्रतमा के हृदय स्थल तक जा सकेंगे। यहाँ एक गैलरी बनी हुई है जहाँ एक साथ 200 पर्यटक खड़े होकर सतपुड़ा और वधियांचल पहाड़ियों से घरि नर्मदा नदी, सरदार सरोवर बांध और वहाँ स्थिति फूलों की घाटी का नजारा भी देख सकेंगे।
- स्टैच्यू ऑफ यूनिटी से 3 कमी. की दूरी पर टेंट सटि, फूलों की घाटी और श्रेष्ठ भारत भवन नामक एक कन्वेंशन सेंटर का भी नरिमाण कया गया है।
- यह स्टैच्यू 180 कमी. प्रतघंटे की रफ्तार से चलने वाली हवा में भी स्थरि खड़ा रहेगा और 6.5 तीव्रता के भूकंप को सहने में सक्षम होगा।
- इस प्रतमा के अंदर सरदार पटेल का म्यूजियम भी तैयार कया गया है जिसमें सरदार पटेल की स्मृतासे जुड़ी कई चीज़ें रखी जाएंगी।

कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य

- प्रतविर्ष 31 अक्टूबर 'राष्ट्रीय एकता दिवस' के रूप में मनाया जाता है।
- पटेल जयंती के अवसर पर देश के युवाओं के लिये 'रन फॉर यूनिटी' नामक दौड़ का भी आयोजन होता है।
- इस प्रतमा के अनावरण समारोह में शामिल होने के लिये वाराणसी से गुजरात हेतु 'एकता ट्रेन यात्रा' नाम से ट्रेन चलाई गई जिसका संचालन सरदार पटेल के पैतृक गाँव करमसद तक कया गया।
- सरदार वल्लभभाई पटेल को आधुनिक 'भारत का बस्मारक' भी कहा जाता है।

सरदार पटेल की राजनीतिक जीवनी

- 31 अक्टूबर, 1875 को गुजरात के नडियाड में जन्मे सरदार वल्लभभाई पटेल ने भारत के स्वतंत्रता संघर्ष में पहला योगदान, 1918 में गुजरात के खेड़ा संघर्ष में दया था।
- उन्होंने बोरसद सत्याग्रह के द्वारा बोरसद तालुका की जनता को 'हदीया' नामक एक दंडात्मक कर से मुक्त कराया।
- सरदार पटेल ने 1923 में, नागपुर में राष्ट्रीय झंडा आंदोलन का सफल नेतृत्व कया।
- बारदोली के कसिानों के लगान में सरकार द्वारा की गई वृद्धिके खिलाफ 1928 में सत्याग्रह आंदोलन का नेतृत्व पटेल ने कया जहाँ इन्हें महिलाओं ने 'सरदार' की उपाधि दी।
- 1931 में इन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस के कराची अधविशन की अध्यक्षता की और असहयोग आंदोलन, स्वराज आंदोलन, दांडी यात्रा तथा भारत छोड़ो आंदोलन में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका नभाई।
- सरदार पटेल स्वतंत्र भारत के पहले उप-प्रधानमंत्री बने तथा साथ ही गृह, सूचना एवं प्रसारण मंत्री का प्रभार भी संभाला।

- आज़ादी प्राप्त होने के बाद, भारत की देशी रियासतों के राष्ट्रीय एकीकरण में सरदार पटेल की प्रमुख भूमिका रही और बर्ना युद्ध के इन्होंने लगभग 562 देशी रियासतों का देश में वलिय कराया ।
- वलिय समझौते के लिये असहमत जम्मू-कश्मीर, हैदराबाद एवं जूनागढ़ को भी सरदार पटेल ने अपनी कूटनीतिक समझदारी का परचिय देते हुए नवंबर 1947 तक देश में मला लया ।
- भारत के एकीकरण में पटेल के योगदान को देखते हुए उन्हें 'लौह पुरुष' की उपाधिप्राप्त हुई ।
- 1991 में मरणोपरांत इन्हें 'भारत रत्न' सम्मान दया गया ।

PDF Referenece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/statue-of-unity>

